घाती कर्म

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जीवों के उत्थान और पतन में कर्म की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कर्मवाद का यह सिद्धांत है कि जो जैसा कर्म करता है उसको उसका फल अवश्य भोगना पड़ता है। कर्मों का फल भोगे बिना संसार से मुक्ति नहीं मिलती। संसार में आवागमन रोकने के लिए कर्म बीज को नष्ट करना बहुत आवश्यक है। जिसने अपने कर्मों को नष्ट कर दिया है, उसका संसार में आवागमन रूक जाता है। जिस प्रकार दग्ध बीजों में से पुनः अंकुर फूटने की शक्ति नहीं रहती उसी प्रकार कर्मरूपी बीजों के नष्ट हो जाने पर उनमें भवरूपी अंकुर उत्पन्न करने की शक्ति नहीं रहती। जब कर्म बीज नष्ट हो जाते हैं तो आत्मा अपने शुद्ध स्वरूप में स्थित होकर लोकाग्रह में विराजता है। गीता में भी कहा गया है कि जिस व्यक्ति के सम्पूर्ण कर्म कामना और संकल्प से रहित होते हैं तथा ज्ञानाग्नि से संपूर्ण संचित कर्म जल जाते हैं ऐसे व्यक्ति को ज्ञानीजन पंडित कहते हैं।

जैनागमों में आठ कर्मों का उल्लेख मिलता है। जिनसे बंधा हुआ जीव संसार में परिवर्तन करता रहता है। इन आठ कर्मों में ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय कर्म घाती कर्म कहलाते हैं। इन्हें घाती कर्म इसलिए कहा जाता है कि ये कर्म आत्मा के स्वाभाविक गुणों का घात करते हैं। आत्मा अनंत ज्ञान संपन्न है। संसार में जितनी आत्माएं हैं, उन सब में अनंत ज्ञान विद्यमान है। ज्ञानावरणीय कर्म आत्मा के अनंत ज्ञान को आच्छादित कर देता है। ज्ञानावरणी कर्म आंख की पट्टी के समान है। जिस प्रकार आंख के आगे पट्टी बांधने से देखने में रूकावट होती है, वैसे ही ज्ञानावरणीय कर्म आत्मा की ज्ञान शक्ति का निरोध कर देता है। जो कर्म आत्मा के साक्षात्कार करने की शक्ति के आवरण करने में निमित्त हैं वे दर्शनावरणीय कर्म है। दर्शनावरणीय कर्म प्रतिहारी के समान है। जैसे प्रतिहारी राजा के दर्शन

में रूकावट डालता है, वैसे ही दर्शनावरणीय कर्म आत्मा की दर्शन शक्ति को आच्छादित कर देता है।

जो कर्म आत्मा के मोह भाव के होने में निमित्त बनते हैं, वे मोहनीय कर्म है। मोहनीय कर्म मद्यपान करने के समान है। जिस प्रकार मद्यपान करने वाले को शुद्ध–बुद्ध नहीं रहता, उसी प्रकार मोहनीय कर्म के उदय से जीवों की तत्व श्रद्धा विपरीत हो जाती है और विषय भोगों में आसक्ति बढ़ती जाती है। जिन कर्मों के कारण आत्मा की दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य की शक्ति में विघ्न बाधाएं या रुकावटें आयें, पदार्थ पास में होते हुए भी उनका भोगोपभोग न हो सके, उन्हें अंतराय कर्म कहते हैं। अंतराय कर्म राजा के कोषाध्यक्ष के समान है। जिस प्रकार राजा का आदेश होने पर कोषाध्यक्ष के बिना दिये वह वस्तु नहीं मिलती, वैसे ही अंतराय कर्म दूर हुये बिना इच्छित वस्तु नहीं मिलती।

घाती कर्मों के कारण आत्मा के गुणों का घात होता है। कषाय को बंधन का कारण कहा गया है। चाहे लोह की श्रृंखला हो या स्वर्ण की दोनों से बंधन होता है। अतः जब तक काम, क्रोध, मद, लोभ जैसे कषाय आत्मा के साथ रहेंगे बंधन होगा ही, क्योंकि इससे आत्मा में कर्त्ताभाव जाग्रत हो जाता है। बंधन का कारण कर्त्ताभाव है। मैं और मेरा का अहंकार का कर्त्ताभाव है। दार्शनिक दृष्टि से यदि हम चिंतन करे तो बंधन और मुक्ति जीव के लिए है। कर्मों का बंधना बन्धन है। जो बंधे या जिसके द्वारा बांधा जाये या बन्धन मात्र को बन्ध कहते हैं। कषाय सहित होने से जीव कर्म के योग्य पुद्गलों को ग्रहण करता है, वह बन्ध हैं।

कर्म प्रदेशों का आत्मप्रदेशों में एक क्षेत्रावगाह हो जाना, बन्ध है। मिथ्यादर्शनादि द्वारों से आए हुए कर्म पुद्गलों का आत्मप्रदेशों में एक क्षेत्रावगाह हो जाना बन्ध है। जैसे बेड़ी आदि से बंधा हुआ प्राणी परतन्त्र हो जाता है और इच्छानुसार देशादि में नहीं आ–जा सकता, उसी प्रकार कर्मबद्ध आत्मा परतन्त्र होकर अपना इष्ट विकास नहीं कर पाता। अनेक प्रकार के शरीर और मानस दुःखों से दुःखी होता है। राग–द्वेषादि के निमित्त से जीव के साथ पौद्गलिक कर्मो का बन्ध निरन्तर होता है। जीव के भावों की विचित्रता के अनुसार वे कर्म भी विभिन्न प्रकार की फलदान शक्ति को लेकर आते हैं, इसी से वे विभिन्न स्वभाव या प्रकृति वाले होते हैं।

सम्यग् दर्शनादि कारणों से सम्पूर्ण कर्मों का आत्यान्तिक मूलोच्छेद होना मोक्ष है। जिस प्रकार बन्धन मुक्त प्राणी स्वतन्त्र होकर यथेच्छ गमन करता है, उसी तरह कर्म–बन्धन मुक्त आत्मा स्वाधीन हो अपने अनन्त ज्ञान दर्शन सुख आदि का अनुभव करता है। फल की इच्छा से किया गया कार्य कर्त्ताभाव को जागृत करता है। अतः जब तक कर्त्ताभाव का त्याग नहीं होता तब तक अहंकार बना रहता है। अतः अहंकार त्यागकर कर्त्ताभाव को छोड़कर ईश्वरार्पण बुद्धि रखकर कार्य करने से कर्त्ताभाव से मुक्ति मिल जाती है।

कार्मण शरीर के कारण जीव सुखों में डूब जाता है। सत् असत् प्रवृत्ति के कारण कर्म आत्मा की तरफ आकृष्ट होकर आत्मा से चिपक जाता है। जिसके कारण आत्मा कर्मों से बद्ध हो जाता है। यह मेरा है, यह तुम्हारा है यही कर्त्ताभाव है और यही मिथ्यात्व है। जीव का चरम और परम लक्ष्य है– मोक्ष प्राप्ति। जिसने समस्त कर्मों का क्षय करके अपने साध्य को सिद्ध कर सफलता प्राप्त कर ली वह मोक्ष का अधिकारी है।